सित्ती किच्चना (परम प्रसाद)

बिशु उरांव[1], डॉ० सविता उराँव[2]

शोधार्थी , सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर कुँडुख़ विभाग , 'संस्कृत विभाग'
राँची विश्वविद्यायल, राँची विमेन्स कॉलेज, राँची

कुँडुख़ आदिवासी समाज में धरती माता की गोद पर जीवन व्यतीत करता आ रहा है। उसके लिए धरती पर जंगल–झाड़, पहाड़–पर्वत, पेड़–पौधें, नदी–नाला, खेत–खलिहान आदि से गहरा नाता हैं। धरती की इन सारी चीजों के बदौलत की इनका जीवन सुखी एवं मंगलमय हो पाया है। इन प्राकृतिक उपहारों को प्रकृति पूजक आदिवासी कतई बिसर नहीं पाते है। सत्य है–वे आदि पूर्वजो, माँ सरना, कुल देवता, एव लक्ष्मी को स्मरण किए बिना और उन्हें अर्पित किये बिना कोई शुभ मुहूर्त का कार्य नहीं किया जाता है।

सित्ती यानी सित्ती –किच्चना अथवा परम प्रसाद चढ़ाना उराँव आदिवासी समुदाय में यह कृत्य करम पूजा, सरहुल, फगुआ, एवं अन्य महत्वपूर्ण पूजा–अर्चनाा में धड़ल्ले से सम्पन्न हुआ करते है। सच इसी अनुष्ठान से महत्वपूर्ण पूजा अर्चना कार्य आरम्भ होता है इस शुभ कार्य को प्रायः पाहन पुजारी, महतो, मुण्डा, एवं घर–परिवार के मुखिया ही अक्सर करते है। इस कार्य को परिवार के सदस्य अपने भोजन एवं खान–पान के पूर्व माँ धरती एवं कुलदेवों के नाम आवश्यक रूप में अर्पित करता है। तत्पश्चात ही वह आगे की कार्यवाही करता है। सित्ती किच्चना अथवा परम प्रसाद चढ़ाना इसी धार्मिक अनुष्ठान का ही अति विशिष्ट अंश है। कुडुख़ भाषा में सुक्खें–सित्ती किच्चना अथवा खट्टना की संज्ञा दी गई है सुक्खे का अर्थ परम सुख! सित्ती सिरासिता यानी पूर्वजों के लिए चढ़ावा। यहाँ कुँडुख़ भाषा में यह शब्द युग्म सज्ञान रूप धारण कर लिया है। तथा सांस्कृतिक परम्पराओं से गहरे रूप से जुड़ हुआ है।

'सित्ती किच्चना' सरना धर्मावलम्बियों के बीच ऐसा शुभ धार्मिक कृत्य है जो आदिवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनजीवन में प्रायः ही सम्पन्न हुआ करता है। महत्वपूर्ण पर्व त्योहारों में करमा, सरहुल आदि के शुभ अवसरों पर परिवार की माताएँ या बहने जो पकवान तैयार करती हैं, उसे परिवार के मुखिया अर्थात वरिष्ठ सदस्य घर के पवित्र स्थान अथवा चूल्हा–स्थान पर गोबर से लीपकर पवित्र किया जाता हैं साल के तीन अथवा पाँच ऐसे पत्ता को चुना जाता जो साफ हो, जिसमें छिद्र अथवा किसी प्रकार का दाग न हो, साथ ही मुख्य सिरा के बगल से आने वाली सभी सहायक सिराएँ एक संधि में दोनों बगल से आकर मिलती हो। इस शुभ कार्य को सम्पादित करने वाला परिवार का मुखिया व परिवार का प्रधान होता है। वह इस अनुष्ठान के निर्मित तीन पकवान जो शुरू में पकायें जाते है आदि को लेकर पूरब मुँह कर पूजा पर बैठता है। चुने हुए साल पत्तों को पूरब–पश्चिम लम्बाई में तथा उत्तर–दक्षिण पंक्ति में रखता है। दाहिने से बाँए क्रमशः अर्ध्य के रूप में हड़िया का श्रेष्ठतम अंश जल तथा पकवाने के छोटे–छोटे कुटड़ो को तीन बार दाहिने से बाँये अर्पित करता है। प्रणाम करता है, प्रार्थना करता है – धरती पूर्वज कुलदेवों से आशीष लेता है कि आदिवासी सरना धर्मावलम्बी भाई कोई भी शुभ कार्य करने से पहले धरती माता पूर्वजो एवं अराध्य देवताओं को याद करते। जिस प्रकार हिन्दू समाज में विष्णु महेश पार्वती को याद कर चारों ओर पानी का बूंद गिराकर या छिड़ककर यह कर्म किया जाता है, और ईसाई बंधु क्रॉस का चिन्ह पिता, पुत्र परमेश्वर पवित्र आत्मा के नाम का शब्द जप कर धर्मेस को याद करके ही यह शुभ कर्म की शुरूआत करते है। इसी तरह का धार्मिक अनुष्ठान आदि धर्मावलम्बियों के बीच आदिवासी के बीच सुक्खे सित्ती या सित्ती किच्चना प्रसाद चढ़ाना स्वतः लोकप्रिया एवं प्रचलित धार्मिक कृत्य या नेग–दस्तूर है।

पर्व में वर्णित तीन स्थान पर तीन पंक्तियों में ही क्यों पकवान या परम प्रसाद अर्पित किया जाता है, एक ही स्थान पर क्यों नहीं? सर्वप्रथम आदि धर्मवलम्बी आदिवासियों की सृष्टि माता रूपी धरती की गोद में हुई। इसका जन्म करम लालन–पापन जीवन–जिन्दगी, खेत–खलिहान ये सारी सुख सुविधाएँ प्रकृति की देन है इसलिए इसके नाम पर प्रथम पत्ती पर में पकवान, परम प्रसाद गिराया जाता है। धरती को माँ और सूर्य को पिता के रूप में माना जाता है।

दूसरा आदिवासी समाज पूर्वजों शाश्वत रूप से याद करता है अपने पूर्खो यानी पचवा आलर (आत्मा) को याद करते है। आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते है। और अपने पूर्वजों के बताए गये रास्ते में चलते आ रहे है।

तीसरा कुँडुख़ आदिवासी समाज धर्मेस एवं लक्ष्मी, कुलदेवों पर विश्वास करता है। यह तीसरा और अन्तिम अंश उन्हीं के नाम से गिराते है और लक्ष्मी को याद करते है कि जीवन भर उनका भरण–पोषण में सहयोग देता हैं।

उराँव आदिवासी समाज हंड़िया (मादक द्रव्य) को आदि काल से ही अपनी सांस्कृति मानता है इस बात को स्पष्ट नहीं कहा जा सकता है की कब से यह सेवन होता आ रहा है। पुरखों ने कोई भी शुभ कार्य करने से पूर्व 'सित्ती किच्चना' का चढ़ावा किए बिना नहीं करते है। और हंड़िया को प्रसाद के रूप में पीया जाता है। उसी हंडिया को परम प्रसाद माना जाता है जो धरती माँ, पूर्वजों, लक्ष्म कुलदेवों आदि को चढ़ाया जाता है।

निष्कर्षः– आज के आधुनिकता में हंडिया को मादक पद्रार्थ के रूप में पिया जाता है जो कि बिलकुल ही गलत है। उराँव आदिवासी समाज में हंड़िया का उपयोग विशेष अनुष्ठान एवं पर्व त्योहारों में चढ़ावा परम प्रसाद के लिए किया जाता है। जिसे हम पंच रस भी कह सकते है क्योंकि इस हंड़िया को बनाने के लिए एक रानू का उपयोग किया जाता है जो कई एक औषधि से मिलाकर बनाया जाता है। उराँव आदिवासी प्रकृति का पूजक होने के नाते वे विशिष्ट पर्व त्योहारों में एवं अन्य पुन्य कार्यो में किसी न किसी रूप में प्रकृति की ही पूजा करते है।

संदर्भ ग्रंथ

उराँव–सरना धर्म और संस्कृति
सरना फूल
उराँव संस्कृति